देहली 5

किसी ने मुझे इजाज़त नहीं दी।

एक अजीब आदत है जो बहुत से लोगों के साथ जीवन भर चलती है।

वे इंतज़ार करते हैं।

वे सही क्षण का इंतज़ार करते हैं।

वे सही मौके का इंतज़ार करते हैं।

वे मान्यता का इंतज़ार करते हैं।

वे किसी ऐसे का इंतज़ार करते हैं जो उन्हें कहे कि वे तैयार हैं।

वे एक अदृश्य अनुमति का इंतज़ार करते हैं जो लगभग कभी नहीं आती।

सालों तक मैंने असाधारण स्त्री-पुरुषों को अपनी संभावनाओं की देहली पर ठिठके देखा।

इसलिए नहीं कि उनमें प्रतिभा की कमी थी।

इसलिए नहीं कि उनमें बुद्धि की कमी थी।

बल्कि इसलिए कि वे एक इजाज़त का इंतज़ार करते थे।

किसी ऐसे का जो कहे:

"जाओ।"

"अब तुम कर सकते हो।"

"तुम्हें इजाज़त है।"

जीवन शायद ही कभी ऐसे काम करता है।

बल्कि, लगभग कभी नहीं।

पीछे मुड़कर देखता हूँ, तो मैं पाता हूँ कि मेरे अस्तित्व के सचमुच महत्वपूर्ण फ़ैसलों में से किसी के भी पहले कोई निश्चितता नहीं थी।

किसी के भी नहीं।

जब मैंने कुछ नया शुरू किया तब मैं तैयार नहीं था।

जब मैंने दिशा बदली तब मेरे पास सारी जानकारी नहीं थी।

जब मैंने अपने से बड़ी चुनौतियाँ स्वीकारीं तब मेरे पास गारंटियाँ नहीं थीं।

मेरे पास सिर्फ़ एक विश्वास था।

कि ठिठके रहना उससे बदतर होता।

जिया गया जीवन और देखा गया जीवन के बीच का अंतर अक्सर वहीं होता है।

उस क्षण में जब कोई व्यक्ति भविष्य से इजाज़त माँगना छोड़ देता है।

जवानी में हम मानते हैं कि कुछ लोग हमारे लिए फ़ैसला करने के ज़िम्मेदार हैं।

शिक्षक।

अधिकारी।

संस्थाएँ।

सत्ताएँ।

समय के साथ हम पाते हैं कि वे लोग भी उसी रहस्य से जूझ रहे हैं जिससे हम जूझते हैं।

किसी के पास पूरा नक्शा नहीं है।

कोई सचमुच अंत नहीं जानता।

सब लोग अपनी कहानी का एक हिस्सा तात्क्षणिक गढ़ रहे हैं।

यह खोज डरा सकती है।

या फिर आज़ाद कर सकती है।

मेरे लिए यह एक मुक्ति थी।

क्योंकि इसने मुझे ज़िम्मेदारी उठाने पर मजबूर किया।

ज़िम्मेदारी एक अजीब शब्द है।

बहुत लोग इसे बोझ से जोड़ते हैं।

मैं इसे आज़ादी से जोड़ता हूँ।

जब तक कोई और तुम्हारे लिए फ़ैसला करता है, तुम हमेशा उसे दोष दे सकते हो।

जब तुम फ़ैसला करते हो, तो कोई बहाने नहीं बचते।

सिर्फ़ तुम बचते हो।

और वह दिशा जो तुमने चुनी।

ऐसे क्षण आए जिनमें हार मान लेना कहीं ज़्यादा आसान होता।

जहाँ था वहीं रह जाना।

जोखिम न लेना।

खुद को न उजागर करना।

न बदलना।

हर रास्ते में ये चौराहे होते हैं।

वे बिना ऐलान किए आते हैं।

एक दरवाज़ा खुलता है।

हमारा एक हिस्सा उसे पार करना चाहता है।

दूसरा भाग जाना चाहता है।

क्योंकि बदलाव की हमेशा एक कीमत होती है।

कोई उस क्षण को नहीं देखता।

बाहर से सब कुछ आसान लगता है।

भीतर से यह एक जंग है।

दुनिया के खिलाफ़ नहीं।

अपने आप के खिलाफ़।

गलती करने के डर के खिलाफ़।

योग्य न होने का डर।

फ़ैसले का डर।

जो पहले से हमारे पास है उसे खोने का डर।

मैंने सीखा कि डर एक बुरा सलाहकार है पर एक बेहतरीन संकेतक।

अक्सर वह ठीक उसी दिशा की ओर इशारा करता है जिसे हमें टटोलना चाहिए।

इसलिए नहीं कि वह सुखद है।

इसलिए कि उसमें विकास है।

जिन अनुभवों ने मेरे जीवन को रूपांतरित किया वे आरामदेह नहीं थे।

वे गारंटीशुदा नहीं थे।

वे जोखिमों से रहित नहीं थे।

वे बस ज़रूरी थे।

किसी बिंदु पर चुनना पड़ता है।

या तो अनुमतियाँ माँगते रहो।

या फिर जीना शुरू कर दो।

ये दोनों चीज़ें शायद ही कभी मेल खाती हैं।

मैं ऐसे लोगों से मिला जिनके पास हर संभव योग्यता थी और जो कभी नहीं निकले।

और ऐसे भी जिनके पास लगभग कुछ नहीं था पर जिन्होंने महाद्वीप पार किए, उद्यम खड़े किए, बीमारियों का सामना किया, अपने अस्तित्व को नए सिरे से गढ़ा।

अंतर रेज़्यूमे में नहीं था।

वह रवैए में था।

दूसरों ने कुछ समझ लिया था।

कोई उन्हें बचाने नहीं आएगा।

कोई उन्हें एकदम सही क्षण नहीं सौंपेगा।

कोई आधिकारिक रूप से प्रमाणित नहीं करेगा कि वे तैयार हैं।

इसलिए उन्होंने शुरू कर दिया।

और बस।

समय के साथ मैं समझ गया कि लगभग सभी बड़े रूपांतरण अपूर्ण ढंग से शुरू होते हैं।

एक पहला डगमगाता कदम।

एक फ़ोन कॉल।

एक यात्रा।

एक हस्ताक्षर।

एक फ़ैसला जो उसे लेने वाले व्यक्ति से बड़ा लगता है।

अक्सर साहस को डर की अनुपस्थिति के रूप में वर्णित किया जाता है।

यह बेवकूफ़ी है।

साहस तब आगे बढ़ना है जब डर तुम्हारे साथ-साथ चलता रहता है।

यह जानते हुए कि वह गायब नहीं होगा।

यह जानते हुए कि वह शोर मचाएगा।

यह जानते हुए कि वह तुम्हें वापस लौटने के लिए मनाने की कोशिश करेगा।

और फिर भी आगे बढ़ते हुए।

जिसे आज हम एक सुसंगत प्रक्षेप-पथ के रूप में देखते हैं वह, जिस क्षण घट रहा था, नाज़ुक विकल्पों का एक क्रम था।

कई बार मुझे सही काम करने की निश्चितता नहीं थी।

मुझे सिर्फ़ इतनी निश्चितता थी कि कुछ न करना ही गलत काम था।

यह एक सूक्ष्म पर निर्णायक अंतर है।

जीवन हमेशा उसे इनाम नहीं देता जो जीतता है।

वह अक्सर उसे इनाम देता है जो निकल पड़ता है।

जो कोशिश करता है।

जो हिम्मत करता है।

जो दरवाज़ा पार करता है।

क्योंकि हर अनुभव एक और अनुभव जन्माता है।

हर कदम नई संभावनाएँ रचता है।

हर हरकत नई मुलाकातें पैदा करती है।

अचल बने रहना, इसके उलट, सिर्फ़ अचलता पैदा करता है।

आज बहुत से लोग प्रेरणाएँ खोजते हैं।

मैं एक दिशा खोजता हूँ।

प्रेरणाएँ बदलती हैं।

दिशाएँ बनी रहती हैं।

हमेशा ऐसे लोग होंगे जो तुम्हें समझाने को तैयार हैं कि कोई चीज़ क्यों असंभव है।

क्यों यह सही समय नहीं है।

क्यों तुम तैयार नहीं हो।

क्यों तुम्हारे पास काफ़ी अनुभव नहीं है।

क्यों जोखिम बहुत ज़्यादा है।

उन्हें सुनो।

फिर खुद फ़ैसला करो।

क्योंकि आख़िरकार उनमें से कोई तुम्हारा जीवन नहीं जिएगा।

उनमें से कोई तुम्हारे त्यागों का बोझ नहीं उठाएगा।

उनमें से कोई तुम्हारी जगह समय को पार नहीं करेगा।

वह एक काम है जो सिर्फ़ तुम्हारा है।

अगर समय ने मुझे कोई एक सबक छोड़ा है, तो वह यही है।

जिन अवसरों ने मेरे अस्तित्व को बदला वे इजाज़त की चिट्ठी के साथ नहीं आए।

वे मुहरें नहीं लाते थे।

वे प्रमाणपत्र नहीं लाते थे।

वे गारंटियाँ नहीं लाते थे।

वे सिर्फ़ एक सवाल लाते थे।

"तुम भीतर आना चाहते हो या बाहर रहना चाहते हो?"

हर बार मुझे डर लगा।

हर बार मैं हिचका।

हर बार मैं वही बात समझा।

कोई मुझे इजाज़त नहीं देगा।

इसलिए मैंने दरवाज़ा खुद खोला।

और वहीं कहानी चलती रही।